

**उपभृत्** (von भृत् mit उप) f. eine hölzerne Opferschale (mit सुव, बुह् und ध्रुवा unter dem allgemeinen Namen der सुचः befasst) AK. 2, 7, 24. H. 828. बुह्दाधारं धामुपभृत्तरिन्तं ध्रुवा दधार पृथिवीं प्रतिष्ठाम् AV. 18, 4, 5, 6. VS. 2, 6. खादिरः सुवः, पर्णमयी बुहः, आश्वत्थ्युपभृत्, वैकङ्क-ती ध्रुवा, एतद्वै सुचां इपम् TS. 3, 5, 2, 3. ÇAT. Br. 1, 3, 2, 2. fgg. 3, 8, 2, 13. 11, 4, 2, 1. 2. 12, 5, 2, 7. KĀTJ. Çr. 1, 3, 35. पाणिभ्यां बुह्ं परिगृह्योपभृत्या-धानम् 10, 9, 3, 1, 16. 3, 9, 6, 6. 8, 2, 26. ÂÇV. GRH. 4, 3. KAUC. 81.

**उपभोक्ता** (von भुज् mit उप) nom. ag. Geniesser (in übertr. Bed.): कृतस्य तस्यैव स चोपभोक्ता ÇVETĀÇV. Up. 5, 7.

**उपभोग** (wie eben) m. Genuss, Gebrauch; vom eig. Essen: शुष्कमंसो-पभोग KATHĀS. 8, 23. in übertr. Bed. AK. 3, 3, 20. H. 638. न ज्ञातु कामः कामानामुपभोगेन शान्यति M. 2, 94 (= MBH. 1, 3174). वनस्पतीनां सर्वेषा-मुपभोगो यथा यथा (je nach dem Nutzen, den man von ihnen zieht) | त-था तथा दमः कार्यो हिंसायामिति धारणा ॥ 8, 285. JĀGĀ. 2, 171. 3, 169. अर्थोपभोग MBH. 3, 97. कामोप° BHAG. 16, 11. वरवधूसुरतोप° KĀURAP. 49. लोकात्तरफलोप° PRAB. 110, 5. प्रियोप° des oder der Geliebten (obj.) RAGH. 12, 22. KATHĀS. 13, 122. mit dem subj. compon.: चरणोपभोगमुभोगो लान्तरसः ÇĀK. 80. धनेनोपभोगरहितेन PĀNĀT. 135, 10. HIT. I, 149. पि-तृमातृस्वर्जनः प्रतिपूजिता विक्षिप्तोपभोगं प्राप्य 184, 24. ÇĀK. 4, 4. सर्वोप-भोगसंपन्न BRAHMA-P. 55, 6. BHARTṚ. 3, 14, 38. RAGH. 14, 24. H. 72. plur.: दिव्यास्त्वामुपभोगाश्च मत्प्रसादकृताः सदा । उपस्थास्यति MBH. 3, 16575. 14860. 13, 358. KATHĀS. 13, 133. 21, 17. निरुपभोग keinen Genuss habend SĪMĀHJAK. 40. वनं दिव्योपभोगवत् R. 2, 91, 31.

**उपभोगिन्** (wie eben) adj. geniessend: ब्राह्मणस्वोपभोगिनः (नृपाः) MBH. 3, 13067.

**उपभोग्य** (wie eben) adj. geniessbar: विक्षोऽप्येष संजीवकोऽस्माक-मुपभोग्यो भविष्यति PĀNĀT. 86, 23. किंचित्कालोपभोग्यानि यौवनानि ध-नानि च II, 122. अनिर्दयोपभोग्यस्य रूपस्य ÇĀK. Ch. 59, 13. KUMĀRAS. 1, 20. अनुपभोग्य R. 3, 22, 5. subst. n. Object des Genusses: देवोप° MBH. 1, 2346. स राज्ञ उपभोग्यानि (sic) स्त्रियो रत्नधनानि च । आदे सर्वशो मूढ ऐश्वर्यं च स्वयं तदा ॥ 7479. नवमिव राज्यमनिर्जितापभोग्यम् MĀRĪKĀH. 113, 6.

**उपभोजिन्** (wie eben) adj. essend SUÇR. 2, 395, 9, 10.

**उपभोज्य** (wie eben) adj. zur Speise dienend: विविधान्यन्नपानानि पुरु-षा येऽनुयायिनः । ते वै नृपोपभोज्यानि ब्राह्मणानां ददुश्च ह ॥ MBH. 14, 2552.

**उपमै** (von उप) adj. f. आ 1) der oberste, höchste: उपमै रौचने दिवः RV. 8, 71, 4. 6, 67, 6. 5, 3, 3. दधो यत्केतुमुपमै समत्सु 7, 30, 3. दिवश्चिदंती उपमौ उदान् 10, 8, 1. राज्ञामि कृष्टेरुपमस्य वज्रेः 4, 42, 1. 9, 86, 35. 10, 5, 6. AV. 4, 1, 1. — 2) der nächste, erste: इयुषीणामुपमा शश्वतीनां विभा-तीनां प्रथमा RV. 1, 113, 15. 124, 2. उतोपमानां प्रथमो नि वीदसि 8, 50, 2. उपमे NAIGH. 2, 16. — 3) der höchste, herrlichste, trefflichste: इन्द्रं न-मस्यनुपमेभिर्हर्कैः RV. 1, 33, 2. 7, 39, 7. 62, 3. आङ्गुष्म 61, 3. वज्रयम् 7, 30, 4. शर्वः 8, 51, 8. अर्वः 69, 5. 88, 2. 1, 110, 5. उपमै त्वा मधोनां ज्येष्ठं च वृष-भाणाम् VALAH. 5, 1. RV. 5, 58, 5. 64, 4. 10, 29, 3. — Vgl. 1. उपमा und उपमाम्: उपम am Ende eines adj. comp. s. u. 2. उपमा.

**उपमहु** (उप + महु) m. N. pr. ein Sohn Çvaphalka's und jüngerer Bruder Madgu's HARIV. 1917. 2083. VP. 435.

**उपमन्त्रण** (von मन्त्र् mit उप) n. das Bereden, Beschwatzen P. 1, 3, 47.

**उपमन्त्रिन्** (wie eben) adj. ermunternd, antreibend: कृसनामुपमन्त्रिणाः RV. 9, 112, 4.

**उपमन्त्र्यनी** (von मन्त्र् mit उप) f. Rührstab, du. KAUC. 27. 43. 82. उप-मन्त्र्यन्यौ ÇAT. Br. 14, 9, 2, 21 = BṚH. ÂR. Up. 6, 3, 13.

**उपमन्त्रितर** (wie eben) nom. ag. (Butter u. dgl.) rührend VS. 30, 12.

**उपमन्यु** (उप + मन्यु) 1) adj. eifrig, anstrebbend RV. 1, 102, 9. — 2) m. N. pr. ein Schüler von Dhaumja Âjoda MBH. 1, 684. 697. वैपाप्रपादस्य उपमन्योः 13, 634. उपमन्यवः pl. zu औपमन्यव ÂÇV. Çr. 12, 15.

**उपमर्द** (von मर्द् mit उप) m. 1) durch Druck hervorgebrachte Reibung: यदा नाभूद्रतातोऽस्य (शंकरस्य) गतेष्वद्दशतेष्वपि । तदा तदुपमर्देन चक्रपे भुवनत्रयम् ॥ KATHĀS. 20, 73. अन्यासु तावदुपमर्दसकामु भृङ्ग लोलं विनो-दय मनः सुमनोलतासु SĪH. D. 73, 18. — 2) Vernichtung: लोकोपमर्द KATHĀS. 12, 143. अन्याप° 22, 41.

**उपमर्दक** (wie eben) adj. vernichtend, zu Grunde richtend: नावदिष्यः स्वयं यदि । अभविष्यदिदं शास्त्रं पाणिनीयोपमर्दकम् ॥ KATHĀS. 7, 12.

**उपमैश्वर्यम्** (उ° + श्व°) 1) adj. hochberühmt RV. 2, 23, 1. — 2) m. N. pr. ein Sohn Kuruçravāṇa's und Enkel Mitrātithi's RV. 10, 33, 6, 7.

1. **उपमौ** (von उपमा) adv. in nächster Nähe: स्वादुतन्मा यो वंसौ स्यौन-कृञ्जीवपानं यजते सोपमा दिवः RV. 1, 34, 15. त्वेता नेता तदिद्वर्पुषाम्मा यो अमुच्यत 8, 88, 13.

2. **उपमौ** (von मा mit उप) f. Verhältniss der Aehnlichkeit oder Gleich-heit, Gleichniss AK. 2, 10, 36. H. 1463. तदप्युपमास्ति ÇAT. Br. 12, 5, 1, 5. 14, 6, 9, 32. यथा दीपो निवातस्थो नेङ्गते सोपमा स्मृता । योगिना यत-चित्तस्य युञ्जतो योगमात्मनः BHAG. 6, 19. यस्या नास्त्युपमा भुवि MBH. 1, 6401 (vgl. P. 2, 3, 72). इमामत्रोपमो चापि निबोध 3, 12643. R. 2, 103, 8. य-था तव तथान्येषां दारा रक्ष्या निशाचर । आत्मानमुपमो कृत्वा स्वेषु दारेषु रम्यताम् 5, 23, 5. उपमा नृपतेस्तस्य गजेन्द्रस्यस्य गच्छतः । भवेद्यदि रवि-र्यादागणे सोदयाचलः ॥ KATHĀS. 18, 3. उपमाद्रव्य ein Ding, mit dem eine Vergleichung angestellt wird, KUMĀRAS. 1, 50. अलब्धोपम keinen Ver-gleich zulassend MBH. 3, 16517. उपमार्थे Nir. 1, 4. उपमार्थेन युद्धवर्णा भ-वति 2, 16. 3, 16. 4, 11. 5, 22. उपमार्थेयि 1, 4. — 1, 19. 3, 5. AK. 3, 4, 22, (Col. 28), 11. in rhetorischer Beziehung SĪH. D. 647. fgg. Vergleichungs-  
wort Nir. 3, 15. लुप्तोपमान्यार्थोपमानीत्याचलते (nämlich पदानि) 18. — Sehr häufig am Ende eines adj. comp. nach dem Begriffe, mit welchem Etwas verglichen wird, AK. 2, 10, 38. H. 1462. अमरोपम einem Unsterb-lichen ähnlich N. 5, 44. 9, 34. 23, 23. ÇVETĀÇV. Up. 2, 15. INDR. 1, 3. Hip. 2, 27. ARĀ. 3, 41. DRAUP. 6, 28. R. 1, 5, 20. 6, 3. 9, 47. DAÇ. 1, 2. HIT. I, 90. RAGH. 1, 47. f. आ N. 12, 42. R. 3, 30, 46. — Vgl. अनुपम und उपमान.

**उपमातर** (उप + मातर) f. (eine zweite Mutter) Amme AK. 3, 4, 178. H. 538. Nach ÇKDa. eine ältere nahe Verwandte: मातुःषसा मातुस्तानी पितृव्यस्त्री पितृषसा । अश्वः पूर्वजपत्नी च मातुस्तुत्याः प्रकीर्तिताः ॥ इति स्मृतिः ।

**उपमाति** (von मा = मन् mit उप) f. das Angehen mit einem Wunsch, einer Bitte; Ansprache, Anrede: पूर्वोष्टि इन्द्रायमातयः पूर्वोक्त प्रशस्तयः RV. 8, 40 9. अथा गात्र उपमातिं कृनाया अन् श्रान्तस्य कस्य चित्परेयुः 10, 61, 21. का अस्य पूर्वोपमातयो ह कथेनेमाहुः पर्वरि जग्निरे 4, 23, 3. का वा भूदुपमातिः कयो न आश्विना गमथा ह्ययमोना 43, 4. concret: sich an Jmd (freundlich) wendend, zuthulich oder der mit sich reden lässt, af-